श्रमण २००५ ०१ (फोल्डर नं. ०२५०५५)

सम्पादक - डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय

मुख्य टाइटल
सम्पादकीय
अनुक्रमणिका
जीवदया – धार्मिक एवं वैज्ञानिक आयाम – डॉ. काकतकर वासुदेव राव ---------- १-१७
रुपस्थ एवं रुपातीत ध्यान – डॉ. हरिशंकर पाण्डेय ---------- १८-२४
कर्म – सिद्धान्त एवं वस्तुस्वातन्त्र्य – डॉ. अल्पना जैन ---------- २५-३६
भारतीय दार्शनिक सन्दर्भ में जैन अचेतन द्रव्य – डॉ. विनोद कुमार तिवारी ---------- ४०-४४
प्राकृत भाषा और राजशेखरकृत कर्पूरमज्जरी में देशी शब्द – डॉ. कमलेश कुमार जैन --------- ४५-५६
आचार्य नेमिचन्द्रसूरि कृत रयणचूडरायचरियं में वर्णित अवान्तर कथाएँ एवं उनका मूल्यांकन – डॉ. हुकमचंद जैन ---------- ५७-७४
मुहम्मद तुगलक और जैन धर्म – डॉ. निर्मला गुप्ता ---------- ७५-८०
राजपूत काल में जैन धर्म – डॉ. महेश प्रताप सिंह ----------८१-८५
जौनपुर की बडी मस्जिद क्या जैन मन्दिर है ? – अगरचंद नाहटा ---------- ८६-८८
आनन्दजी कल्याणजी पेढी के संस्थापक युगपुरुष श्रीमद देवचन्द्र जी महाराज – मुनि पीयुष सागर ---------- ८९-९३
The Jaina Manuscript and Minature Tradition – Lalit Kumar ---------- 95-125
Mathematical formulary of Jinistic Precepts – N. L. Jain ---------- 126-133
Scientific Thought Evident in the Labdhisara – L. C. Jain---------- 134-150
विधापीठ के प्रांगण में ---------- १५१-१५५
जैन जगत ---------- १५६-१७५
साहित्य सत्कार ---------- १७६-१८४
सुरसुदरीचरिअं ---------- ५६-१४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org